

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES



ISSN 2277 – 9809 (online)

ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

भारतीय ज्ञान परम्परा और शंकराचार्य

प्रस्तोत्री

डॉ. मंजु पटेल

सहाचार्या हिन्दी

श्री भगवानदास आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, हरिद्वार

आचार्य शंकर भारतीय महान् दार्शनिक एवं धर्मप्रवर्तक और योगी थे। उन्होंने अद्वैत वेदान्त को ठोस आधार प्रदान किया। भगवद्गीता, उपनिषदों और वेदांतसूत्रों पर लिखी हुई इन की टीकाएँ बहुत प्रसिद्ध हैं। उन्होंने सांख्यदर्शन का प्रधानकारणवाद और मीमांसा दर्शन के ज्ञान कर्म समुच्चयवाद का खण्डन किया। उन के विचारोपदेश आत्मा और परमात्मा की एकरूपता पर आधारित हैं जिस के अनुसार परमात्मा एक ही समय में सगुण और निर्गुण दोनों ही स्वरूपों में रहता है। स्मार्त संप्रदाय में आचार्य शंकर को शिव का अवतार माना जाता है। इन्होंने ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, मांडूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, बृहदारण्यक और छान्दोग्योपनिषद् पर भाष्य लिखा। वेदों में लिखे ज्ञान को एकमात्र ईश्वर को संबोधित समझा और उस का प्रचार तथा वार्ता पूरे भारतवर्ष में की। उस समय वेदों की समझ के बारे में मतभेद होने पर उत्पन्न चार्वाक, जैन आदि मतों को शास्त्रार्थों द्वारा खण्डित किया। कलियुग के प्रथम चरण में विलुप्त तथा विकृत वैदिक ज्ञान विज्ञान को उद्भासित और विशुद्ध कर वैदिक वाङ्मय को दार्शनिक, व्यावहारिक, वैज्ञानिक धरातल पर समृद्ध करने वाले एवं राजर्षि सुधन्वा को सार्वभौम सम्राट् ख्यापित करने वाले चतुराम्नाय चतुष्पीठ संस्थापक नित्य तथा नैमित्तिक युग्मावतार श्रीशिवस्वरूप भगवत्पाद शंकराचार्य की अमोघदृष्टि तथा अद्भुत कृति सर्वथा स्तुत्य है।

भारतीय संस्कृति के विकास एवं संरक्षण में आद्य शंकराचार्य का विशेष योगदान है। राजा सुधन्वा जो कि आचार्य शंकर के समकालीन थे, के ताम्रपत्र में आचार्य शंकर का जन्म युधिष्ठिराब्द २६३१ शक् (५०७ ई०पू०) तथा शिवलोक गमन युधिष्ठिराब्द २६६३ शक् (४७५ ई०पू०) सर्वमान्य है। इस के प्रमाण सभी शांकर मठों में मिलते हैं।

आचार्य शंकर ने जो चार पीठ स्थापित किये, उन के काल निर्धारण में उत्थापित की गई भ्रांतियाँ

—

१. उत्तर दिशा में बदरिकाश्रम में ज्योतिर्पीठ : स्थापना—युधिष्ठिर संवत् 2641–2645
२. पश्चिम में द्वारिका शारदापीठ— यु.सं. 2648
३. दक्षिण शृंगेरीपीठ— यु.सं. 2648

४. पूर्व दिशा जगन्नाथपुरी गोवर्द्धनपीठ – यु.सं. 2655

आचार्य शंकर अंतिम दिनों में कांची कामकोटि पीठ २६५८ यु.सं. में निवास कर रहे थे।

शारदापीठ में लिखा है –

‘युधिष्ठिर शके २६३१ वैशाखशुक्लापंचम्यां श्रीमच्छंकरावतारः।

..... तदनु २६६३ कार्तिकशुक्लपूर्णिमायां श्रीमच्छंकरभगवत्पूज्यपादा
निजदेहेनैव निजधाम प्राविशन्निति।

अर्थात् युधिष्ठिर संवत् २६३१ में वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को श्रीशंकराचार्य का जन्म हुआ और युधि.सं. २६६३ कार्तिकशुक्ल पूर्णिमा को देहत्याग हुआ। युधिष्ठिर संवत् ३१३६ ई पू में प्रवर्तित हुआ था।

राजा सुधन्वा के ताम्रपत्र का लेख द्वारिकापीठ के एक आचार्य ने ष्विमर्शा नामक ग्रन्थ में प्रकाशित किया है –

निखिलयोगिचक्रवर्ती श्रीमच्छंकरभगवत्पादपद्मयोर्भ

मरायमाणसुधन्वनो मम सोमवंशचूडामणियुधिष्ठिरपारम्प

यपरिप्राप्तभारतवर्षस्यांजलिबद्धपूर्वकेयं राजन्यस्य विज्ञप्तिः.....युधिष्ठिरशके

२६६३ आश्विन शुक्ल १५।

एक अन्य ताम्रपत्र संस्कृतचंद्रिका (कोल्हापुर) के खण्ड 14, संख्या 2 – 3 में प्रकाशित हुआ था।

उस के अनुसार गुजरात के राजा सर्वजित् वर्मा ने

द्वारिकाशारदापीठ के प्रथम आचार्य सुरेश्वराचार्य (पूर्व नाम – मंडनमिश्र) से लेकर

29वें आचार्य श्री नृसिंहाश्रम तक सभी आचार्यों के विवरण हैं। इस में प्रथम आचार्य का समय 2649 युधि. सं. दिया है।

सर्वज्ञसदाशिवकृत ष्णुयश्लोकमंजरी आत्मबोध द्वारा रचित ‘गुरुरत्नमालिका’ तथा उसकी टीका ष्णुषमा में कुछ श्लोक हैं। उन में एक श्लोक इस प्रकार है –

तिष्ठे प्रयात्यनलशेवधिबाणनेत्रे, ये नन्दने दिनमणावुदगध्वभाजि ।

रात्रोदितेरुडुविनिर्गतमंगलग्नेत्याहूतवान् शिवगुरुः स च शंकरेति ॥

अनल=3, शेवधि=निधि=9, बाण=5, नेत्र=2, अर्थात् 3952। ‘अंकानां वामतो गतिः’

इस नियमसे अंक विपरीत क्रम से रखने पर 2593 कलिसंवत् बना। कलिसंवत् 3102 B.C. में प्रारम्भ हुआ। तदनुसार 3102–2593=509 BC में आदि शंकराचार्य जी का जन्म वर्ष निश्चित होता है।

कुमारिल भट्ट जो कि शंकराचार्य के समकालीन थे, जैन ग्रंथ जिनविजय में लिखा है –

ऋषिर्वारस्तथा पूर्ण मर्त्याक्षौ वाममेलनात्।

एकीकृत्य लभेतांकरुक्रोधस्यातत्र वत्सररु । ।

भट्टाचार्यस्य कुमारस्य कर्मकाण्डैकवादिनरु ।

ज्ञेयरु प्रादुर्भवस्तस्मिन् वर्षे यौधिष्ठिरे शके ।।

जैन लोग युधिष्ठिरसंवत् को ४६८ कलिसंवत् से प्रारम्भ हुआ मानते हैं।

ऋषि=7,वार=7,पूर्ण=0, मर्त्याक्षौ=2, 7702 अंकानां वामतोगति 2077 युधिष्ठिर संवत् आया अर्थात् 557 B.C. कुमारिल 48 वर्ष बड़े थे => 509 B.C. श्रीशंकराचार्य जी का जन्मवर्ष सिद्ध होता है।

‘जिनविजय’ में आचार्य शंकर के देहावसान के विषय में लिखा है –

ऋषिर्बाणस्तथा भूमिर्मर्त्याक्षौ वाममेलनात्।

एकत्वेन लभेतां कस्तामाक्षस्तत्र वत्सररु ॥

2157 यु. सं. 476 ठ.ब. में आचार्य शंकर ब्रह्मलीन हुए :

बृहत्शंकरविजय में चित्सुखाचार्य (शंकराचार्य के सह अध्यायी) ने लिखा है –

षड्विंशकेशतके श्रीमद् युधिष्ठिरशकस्य वै।

एकत्रिंशेऽथ वर्षे तु हायने नन्दने शुभे ॥

प्रासूत तन्वंसाध्वी गिरिजेव षडाननम् ॥

यहाँ युधिष्ठिर शक 2631 में अर्थात् 508 ई. पू. में आचार्य का जन्म संवत् बताया गया है।

वर्तमान इतिहासकार जिन शंकराचार्य को 788 – 820 ई. का बताते हैं वे वस्तुतः कामकोटि पीठके 38वें आचार्य अभिनवशंकर जी थे। वे 787 से 840 ईसवीसन् तक विद्यमान थे। वे चिदम्बरम वासी श्रीविश्वजी के पुत्र थे। इन्होंने कश्मीर के वाक्पतिभट्ट को शास्त्रार्थ में पराजित किया और ३० वर्ष तक मठ के आचार्य पद पर रहे।

आदि शंकराचार्य ने बौद्ध धर्म सहित अपने समय के विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं से धार्मिक वाद-विवाद किया और शास्त्रार्थ में कुछ उल्लेखनीय लोगों को सार्वजनिक रूप से हराया। वे केरल से लंबी पदयात्रा करके नर्मदा नदी के तट पर स्थित ओंकारनाथ पहुँचे। वहाँ गुरु गोविंदपाद से योग शिक्षा तथा अद्वैत ब्रह्म ज्ञान प्राप्त करने लगे। तीन वर्ष तक आचार्य

शंकर अद्वैत तत्त्व की साधना करते रहे। तत्पश्चात् गुरु आज्ञा से वे काशी विश्वनाथ जी के दर्शन के लिए निकल पड़े। जब वे काशी जा रहे थे कि एक चांडाल उनकी राह में आ गया। उन्होंने क्रोधित हो चांडाल को वहाँ से हट जाने के लिए कहा तो चांडाल बोला—हे मुनि! टाप शरीरों में रहने वाले एक परमात्मा की उपेक्षा कर रहे हैं, इसलिए आप अब्राह्मण हैं। अतएव मेरे मार्ग से आप हट जायें। चांडाल की देववाणी सुन आचार्य शंकर ने अति प्रभावित होकर कहा—आपने मुझे ज्ञान दिया है, अतः आप मेरे गुरु हुए। यह कहकर आचार्य शंकर ने उन्हें प्रणाम किया तो चांडाल के स्थान पर शिव तथा चार देवों के उन्हें दर्शन हुए। काशी में कुछ दिन रहने के दौरान वे माहिष्मति नगरी (बिहार का महिषी) में आचार्य मंडन मिश्र से मिलने गए। आचार्य मिश्र के घर जो पालतू मैना थी वह भी वेद मंत्रों का उच्चारण करती थी। मिश्र जी के घर जाकर आचार्य शंकर ने उन्हें शास्त्रार्थ में हरा दिया। पति आचार्य मिश्र को हारता देख पत्नी आचार्य शंकर से बोलीं—महात्मन! अभी आपने आधे ही अंग को जीता है। अपनी युक्तियों से मुझे पराजित करके ही आप विजयी कहला सकेंगे। तब मिश्र जी की पत्नी भारती ने कामशास्त्र पर प्रश्न करने प्रारम्भ किए। किंतु आचार्य शंकर तो बाल-ब्रह्मचारी थे, अतः काम से संबंधित उनके प्रश्नों के उत्तर कहाँ से देते? इस पर उन्होंने भारती देवी से कुछ दिनों का समय माँगा तथा पर-काया में प्रवेश कर उस विषय की सारी जानकारी प्राप्त की। इसके बाद आचार्य शंकर ने भारती को भी शास्त्रार्थ में हरा दिया। काशी में प्रवास के दौरान उन्होंने और भी बड़े-बड़े ज्ञानी पंडितों को शास्त्रार्थ में परास्त किया और गुरु पद पर प्रतिष्ठित हुए। अनेक शिष्यों ने उनसे दीक्षा ग्रहण की। इसके बाद वे धर्म का प्रचार करने लगे। वेदांत प्रचार में संलग्न रहकर उन्होंने अनेक ग्रंथों की रचना भी की। अद्वैत ब्रह्मवादी आचार्य शंकर केवल निर्विशेष ब्रह्म को सत्य मानते थे और ब्रह्मज्ञान में ही निमग्न रहते थे। एक बार वे ब्रह्म मुहूर्त में अपने शिष्यों के साथ एक अति सँकरी गली से स्नान हेतु मणिकर्णिका घाट जा रहे थे। रास्ते में एक युवती अपने मृत पति का सिर गोद में लिए विलाप करती हुई बैठी थी। आचार्य शंकर के शिष्यों ने उस स्त्री से अपने पति के शव को हटाकर रास्ता देने की प्रार्थना की, लेकिन वह स्त्री उसे अनसुना कर रुदन करती रही। तब स्वयं आचार्य ने उससे वह शव हटाने का अनुरोध किया। उनका आग्रह सुनकर वह स्त्री कहने लगी— हे संन्यासी! आप मुझसे बार-बार यह शव हटाने के लिए कह रहे हैं। आप इस शव को ही हट जाने के लिए क्यों नहीं कहते? यह सुनकर आचार्य बोले—हे देवी! आप शोक में कदाचित्त यह भी भूल गईं कि शव में स्वयं हटने की शक्ति ही नहीं है। स्त्री ने तुरंत उत्तर दिया— श्महात्मन् आपकी दृष्टि में तो शक्ति निरपेक्ष ब्रह्म ही जगत का कर्ता है। फिर शक्ति के बिना यह शव क्यों नहीं हट सकता? उस स्त्री का ऐसा गंभीर, ज्ञानमय, रहस्यपूर्ण वाक्य सुनकर आचार्य वहीं बैठ गए। उन्हें समाधि लग गई। अंतःचक्षु में उन्होंने देखा—सर्वत्र आद्याशक्ति महामाया लीला विलास कर रही हैं। उनका हृदय अनिर्वचनीय आनंद से भर गया और मुख से मातृ वंदना की शब्दमयी धारा स्तोत्र बनकर फूट पड़ी। अब आचार्य शंकर ऐसे

महासागर बन गए, जिसमें अद्वैतवाद, शुद्धाद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद, निर्गुण ब्रह्म ज्ञान के साथ सगुण साकार की भक्ति की धाराएँ एक साथ हिलोरें लेने लगीं। उन्होंने अनुभव किया कि ज्ञान की अद्वैत भूमि पर जो परमात्मा निर्गुण निराकार ब्रह्म है, वही द्वैत की भूमि पर सगुण साकार है। उन्होंने निर्गुण और सगुण दोनों का समर्थन करके निर्गुण तक पहुँचने के लिए सगुण की उपासना को अपरिहार्य सीढ़ी माना। ज्ञान और भक्ति की मिलन भूमि पर यह भी अनुभव किया कि अद्वैत ज्ञान ही सभी साधनाओं की परम उपलब्धि है। उन्होंने श्रद्धां सत्यं जगन्मिथ्या का उद्घोष भी किया और शिव, पार्वती, गणेश, विष्णु आदि के भक्तिरसपूर्ण स्तोत्र भी रचे, सौन्दर्य लहरी, विवेक चूड़ामणि जैसे श्रेष्ठतम ग्रंथों की रचना की। प्रस्थान त्रयी के भाष्य भी लिखे। अपने अकाट्य तर्कों से शैव-शाक्त-वैष्णवों का द्वंद्व समाप्त किया और पंचदेवोपासना का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने आसेतु हिमालय संपूर्ण भरत की यात्रा की और चार मठों की स्थापना करके पूरे देश को सांस्कृतिक, धार्मिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक तथा भौगोलिक एकता के अविच्छिन्न सूत्र में बाँध दिया। उन्होंने समस्त मानव जाति को जीवन्मुक्ति का एक सूत्र दिया—

दुर्जनः सज्जनो भूयात सज्जनः शांतिमाप्नुयात् ।

शान्तो मुच्येत बंधेभ्यो मुक्तः चान्यान् विमोचयेत् ॥

अर्थात् दुर्जन सज्जन बनें, सज्जन शांति बनें। शांतजन बंधनों से मुक्त हों और मुक्त अन्य जनों को मुक्त करें। अपना प्रयोजन पूरा होने बाद तैंतीस वर्ष की अल्पायु में उन्होंने इस नश्वर देह को छोड़ दिया।

सन्दर्भ ग्रन्थ

पाण्डेय, संगम लाल. (1994). अद्वैत वेदांत का इतिहास. इलाहाबाद: अक्षयवट प्रकाशन।

शर्मा, चंद्रधर. (2000). भारतीय दर्शन: आलोचनात्मक सर्वेक्षण. मोतीलाल

बनारसीदास।

मिश्र, वाचस्पति. भामती टीका

बलदेव उपाध्याय भारतीय दर्शन

सुरेंद्रनाथ दासगुप्ता A History of Indian Philosophy (Vol- I)

टी.एम.पी. महादेवन The Philosophy of Advaita



EARN YOUR MBA

WWW.IIMPS.IN



Accreditation & Ranking



UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

☎ 011-41005174

RESEARCH
GATEWAY

STOP PLAGIARISM



Arogyam Ayurveda
Holistic Healing through herbs



AROGYAM
ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

परिवर्तन

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD



BLUE

Calms your Child's
Mind & Body

YELLOW

Promotes Concentration,
Stimulates the Memory

PINK

Evokes Empathy,
makes your Child Calm

RED

Excites and energizes
your Child's body

GREEN

Improves Reading speed
and Comprehension

www.parivartan4u.com



परिवर्तन

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY**

ISSN – 2250 – 1959 (O) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
COMMERCE, ARTS AND SCIENCE**

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES**

ISSN 2277 – 9809 (O) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE
ENGINEERING AND TECHNOLOGY**

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM



**INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION**

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM



**JOURNAL OF LEGAL STUDIES, POLITICS
AND ECONOMICS RESEARCH**

WWW.JLPER.COM

JLPE